सम्पादक की कलम से

युग

युग = यु–युक्ति, ग–गन्तव्य।

इसका पूर्ण अर्थ होता है गंतव्य तक पहुंचने की युक्ति अर्थात् लक्ष्य प्राप्त करने का योग्य सरलतम मार्ग। मानव विवेकवान प्राणी है, अपने कार्य को पूरा करने के लिए नई–नई युक्ति लगाता रहता है। वैज्ञानिक लोग भी युक्ति से शुरु होकर वैज्ञानिक विधा का विकास करते हैं। दार्शनिक लोग समय–समय पर जीवन जीने की विधा को बताते रहे। संत, महापुरुष भी जीवचन जीने एवं अपने कर्तव्य का पालन करने की नए तरीके बताते रहे। कवि, लेखक लोग भी अपनी–अपनी शैली से जीवन पर प्रकाश डालते रहे हैं। एक विधा जब निश्चित समय तक चलती रहती है तो उसे एक युग का नाम दे दिया जाता है। मानव विधा प्रकृति पदार्थ के गुणों से प्रभावित होती है। प्रकृति पदार्थ लम्बे समय तक अपने गुण को धारण किये रहते हैं इसलिए एक लम्बे समय तक चलता रहता है। धीरे–धीरे रासायनिक परिवर्तन से प्रकृति पदार्थ के गुण में परिवर्तन आ जाता है तो नई विधा की शुरुआत हो जाती है और नए युग का नाम दे दिया जाता है।

प्रकृति का विकास क्रमिक गति से हुआ है और अब भी हो रहा है। सर्वप्रथम जलीय जीव आए, उसके पदार्थ फिर वनस्पति और जलीय जीव एवं मानव का विकास सबसे बाद में हुआ। मानव विकास के साथ ही युग की शुरुआत हुई। मानव द्वारा बनाई गई व्यवस्था जो लम्बे समय समय तक चलती है उसे युग का नाम दिया गया। आध्यात्मिक नाम से देखा जाए तो त्रेता युग, द्वापर युग, सतयुग, कलयुग के नाम से जाना गया। इतिहास के पन्ने से देखा जाए तो, स्वर्णयुग, ताम्रयुग आदि।

वर्तमान समय में प्लास्टिक युग चल रहा है। युग के पीछे पदार्थ का विशेष योगदान होता है। प्रकृति पदार्थ गुण विशेष की ऊर्जा छोड़ते हैं जिससे प्राकृतिक वातावरण तैयार होता है। जैसा वातावरण होता है उसी तरह का मानव मस्तिष्क का विकास होता है। इसलिए स्थान विशेष पर गुण विशेष के लोग पाए जाते हैं।

वर्तमान समय को लोग कलयुग के नाम से जानते हैं। इस युग में हर कार्य मशीन से होने लगा है। कारखाने का विकास हो रहा

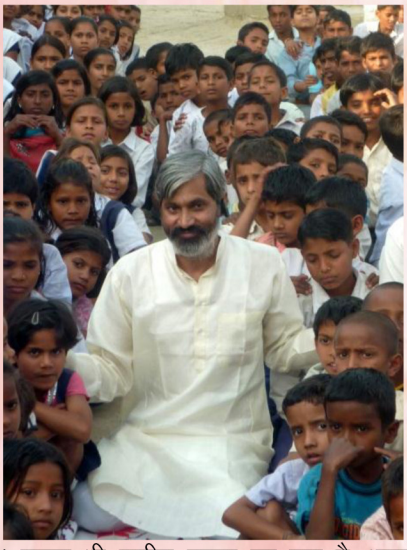

है। मानव भी मशीन बनता जा रहा है, भावना और संवेदना कम होती जा रही है। व्यक्ति सिर्फ कार्य से वास्ता रख रहा है। मानव, मानव से मशीन की तरह कासर्य करवाना चाहता है, जो अप्राकृतिक और अवैज्ञानिक है। यदि कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति को कार्य करने के लिए कहता है तो चाहता है कि मेरे तरीके से कार्य करे। जब योजना किसी और की होती है और कार्य किसी और को करना पड़ऋता है तो कार्य में व्यवधान आता है। जिस व्यक्ति से कार्य लेना हो, उसे योजना दी जाए, पर कार्य करने का तरीका उसका अपना हो। ऐसा करने से कार्य सुलभता से हो जाता है। प्रकृति में पदार्थ, जीव प्रकाश को रोककर गुण का विकास करते हैं। ऊर्जा रूप में गुण निकलकर प्राकृतिक वातावरण तैयार करते हैं जो क्रिया को पूरा करते हैं। जब योजना किसी और की होती है और कार्य कोई और करता है तो प्राकृतिक वातावरण उसके अनुरूप नहीं बन पाता है। इसके लिए योजना बनाकर कार्य करने की स्वतंत्रता कार्य करने वाले पर छोड़ देना चाहिए। जिस स्वरूप से कार्य की योजना बनाई जाती है, उसी स्वरूप में कार्य क्रियान्वित करने में प्रकृति का सहयोग मिलता है। स्वरूप बदलने से कार्य होने में व्यवधान उत्पन्न होन लगता है। जिस स्वरूप से ऊर्जा निकलती है उसी स्वरूप की आकृति ऊर्जा के साथ बन जाती है। जो प्रकृति में अपनी जगह बनाकर प्रकृति का सहयोग प्राप्त करती है इसलिए कार्य का तरीका अपना होना चाहिए। जब किसी गुण की अति हो जाती है तब किसी अन्य गुण (युग) की शुरुआत होती है। प्रकृति अवगुण को खत्म करके गुण का निर्माण करने में निरंतर प्रयत्नशील रहती है। आगे आने वाले समय के लिए प्रकृति सतयुग की जमीन तैयार कर रही है। लगभग यह जमीन तैयार हो गई है। अब इसमे मानव सहयोग की जरूरत है।

चल रही व्यवस्था जब मानव जीवन में परेशानी का कारण बनने लगती है तो मानव जीवन उससे बाहर निकलने के बारे में विचार करने लगता है। ऐसी सोच ही नए युग की जमीन बन जती है। जैसे वृक्ष की आवश्यकता होती है उस प्रकार के बीज बोने की। वर्तमान समय में सतयुग की आवश्यकता है इसलिए मानव समाज को सतविचार रूपी भावनात्मक बीज को रोपित करने की आवश्यकता है। मानव समाज से आग्रह है कि सद्भाव धारण कर प्रकृति में सतयुग स्थापित करने में सहयोग करें। उनके द्वारा छोड़ी गई ऐसी ऊर्जा अन्य लोगों कं अंदर श्वसन किया के माध्यम से जाकर उनके विचारों को बदल देगी। जब अधिकांश लोग सद्विचार धारण कर लेंगे तब सतयुग स्थापित हो जाएगा।❐